

डॉ. गैरी येट्स, पुस्तक 12, सत्र 28, जकर्याह, भाग 2

© 2024 गैरी येट्स और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. गैरी येट्स और 12 की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 28, जकर्याह भाग 2 है।

यह सत्र जकर्याह की पुस्तक पर हमारा दूसरा पाठ है और भविष्यद्वक्ताओं हागै और परमेश्वर के माध्यम से लोगों को एक बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य और एक महत्वपूर्ण जिम्मेदारी के लिए वापस बुलाया गया है, उसके मंदिर का पुनर्निर्माण करना और उसके पास लौटना।

लेकिन इन भविष्यद्वक्ताओं की भूमिका सिर्फ लोगों को चुनौती देना नहीं थी। उन्हें प्रोत्साहित करना, उन्हें दिलासा देना, उन्हें याद दिलाना भी था कि परमेश्वर उनके साथ है। प्रभु हागै के ज़रिए कहने जा रहे हैं, मैं तुम्हारे साथ हूँ।

मैं इसे अंत तक ले जाऊंगा। वह जरुब्बाबेल और यहोशू को सूचित करता है कि तुम्हारे सामने जो पहाड़ दिखाई देते हैं वे बाधाएं हैं; मैं उन्हें समतल बना दूंगा क्योंकि तुम यह मेरी ताकत या अपनी ताकत से नहीं कर रहे हो। तुम यह मेरी ताकत और मेरी आत्मा की शक्ति से कर रहे हो।

तो, जकर्याह की पुस्तक में प्रोत्साहन का संदेश और पुनर्स्थापना का वादा है। पुस्तक की शुरुआत में पश्चाताप के मुद्दे को संबोधित किया गया है। पुस्तक का पहला प्रमुख भाग जकर्याह को दिए गए रात्रि दर्शन हैं।

फिर से, इनमें अभी और अभी नहीं वाला पहलू है। अभी वाला हिस्सा लोगों को आशीर्वाद देना और उनकी मदद करना है, जब वे अपना मंदिर फिर से बना रहे हैं, उस दिन के नेतृत्व पर आशीर्वाद। लेकिन यह एक बड़ी बहाली की ओर इशारा करता है।

जरुब्बाबेल और यहोशू, शाही व्यक्ति और पुजारी व्यक्ति के रूप में अपनी भूमिकाओं में, अंततः धर्मी शाखा, यीशु मसीह की ओर इशारा कर रहे हैं, जो उन दोनों भूमिकाओं को मिलाएगा। जकर्याह की पुस्तक के दूसरे प्रमुख भाग, अध्याय सात और आठ में लोगों के सामने एक और चुनौती पेश की गई है। पुस्तक का यह विशेष भाग उपवास से संबंधित प्रश्नों से संबंधित है।

यह हमें पश्चाताप के मुद्दे पर वापस लाता है और कैसे इस्राएल की ओर से आंशिक पश्चाताप हुआ है, लेकिन अंततः, उन्हें पूरी तरह से प्रभु की ओर और परमेश्वर की आज्ञाओं और परमेश्वर के मार्गों पर लौटने की आवश्यकता है यदि वे उसके आशीर्वाद का अनुभव करना चाहते हैं। जकर्याह सात और आठ की तिथि, परमेश्वर इस मुद्दे और इस मुद्दे के उत्तर के साथ उसके पास आता है। यह सब 518 ईसा पूर्व के दिसंबर में होता है।

तो, यह रात्रि दर्शन के एक वर्ष से अधिक समय बाद की बात है। याद रखें कि मंदिर पर काम जारी है और यह काम 515 ईसा पूर्व तक पूरा नहीं होने वाला है। पुस्तक का यह भाग, भवन और

मंदिर पर ध्यान केंद्रित करने से कहीं अधिक, लोगों की आध्यात्मिक स्थिति पर ध्यान केंद्रित करने वाला है।

अध्याय सात की आयत तीन में लोग पैगंबर के पास एक सवाल लेकर आते हैं। सवाल यह है। क्या हमें पांचवें महीने में भी रोना और परहेज़ करना जारी रखना चाहिए जैसा कि मैं इतने सालों से करता आ रहा हूँ? यह सवाल नेतृत्व द्वारा पैगंबर से पूछा जाता है।

वे जो सवाल पूछ रहे हैं, वह यह है कि क्या हमें, परमेश्वर के लोगों के रूप में, पांचवें महीने में उपवास करके यरूशलेम के पतन की याद को जारी रखना चाहिए? यह वह समय है जब नबूकदनेस्सर ने यरूशलेम शहर पर कब्ज़ा करके उसे नष्ट कर दिया था। यह उपवास यहूदा के इतिहास में हुई इस विनाशकारी घटना की याद में किया गया था। जब वे इस उपवास को पूरा कर रहे थे, तो यह शोक की अभिव्यक्ति भी थी।

यह बहाली के लिए प्रार्थना करने का अवसर था, लेकिन कुछ अर्थों में, यह लोगों के पश्चाताप को भी दर्शाता है। हम जानते हैं कि अध्याय सात, श्लोक पाँच में यह भी बताया गया था कि सातवें महीने में उपवास था। निर्वासन के बाद के समुदाय के हिस्से के रूप में, उन्होंने यरूशलेम के पतन के बाद यहूदा के गवर्नर गेदल्याह की हत्या को याद करने के लिए सातवें महीने में उपवास किया था।

यिर्मयाह की पुस्तक में, यिर्मयाह अध्याय 41 में, यह कहानी हमारे लिए दोहराई गई है। वे इन राष्ट्रीय आपदाओं की याद में ये अनुष्ठान उत्सव मना रहे हैं। इसलिए वे ईश्वर और भविष्यवक्ता के सामने यह सवाल उठा रहे हैं: क्या हमें ये उपवास करते रहना चाहिए? लेकिन इन अनुष्ठानों से ज़्यादा, मुझे लगता है कि सवाल वास्तव में यह दर्शाता है कि क्या निर्वासन खत्म हो गया है और क्या हम ईश्वर के लोगों के रूप में आगे बढ़ सकते हैं? जिस बात पर भविष्यवक्ता ज़ोर देने जा रहे हैं, वह यह है कि यहाँ मुद्दा उपवास नहीं है।

यहाँ मुद्दा यह है कि परमेश्वर चाहता है कि आप पहचानें कि निर्वासन से बाहर, उसने आपका न्याय किया है और आज्ञाओं के प्रति आपकी अवज्ञा के लिए आपको दंडित किया है। यदि आप चाहते हैं कि निर्वासन समाप्त हो जाए, यदि आप इससे आगे बढ़ना चाहते हैं, तो मुद्दा उपवास जारी रखना नहीं है। मुद्दा यह है कि क्या आप वास्तव में परमेश्वर की आज्ञा मानेंगे और वे कार्य करेंगे जो उसने आपको करने की आज्ञा दी है? इसलिए, पहले अध्याय में हमने जो देखा, उससे कहीं अधिक गहरे स्तर के पश्चाताप की आवश्यकता है।

उन्होंने पहले अध्याय में पश्चाताप किया। वे प्रभु के पास लौट आए। प्रभु उनके पास लौटते हैं और उन्हें पुनर्निर्माण करने में सक्षम बनाते हैं।

लेकिन उससे भी आगे, क्या अब वे पूरी तरह से पश्चाताप करेंगे, इस हद तक कि वे प्रभु की आज्ञा मानने की इच्छा रखते हैं? इसलिए, परमेश्वर सातवें अध्याय की नौवीं आयत में भविष्यवक्ता के माध्यम से कहता है, सच्चा न्याय करो, एक दूसरे पर दया और दया दिखाओ, विधवा, अनाथ, परदेशी पर अत्याचार मत करो। इसलिए, सामाजिक न्याय के मुद्दे अभी भी वहाँ थे। निर्वासन के

बाद की अवधि में हमारे पास अभी भी ऐसे उदाहरण हैं, जो प्रभावशाली और धनी हैं और नेता गरीब और जरूरतमंद लोगों का फायदा उठाते हैं।

भविष्यवक्ता कहते हैं कि उपवास मुद्दा नहीं है। मुद्दा यह है कि क्या आप पूरी तरह से परमेश्वर की आज्ञा मानेंगे? मुझे लगता है कि हम यहाँ जकर्याह के सातवें और आठवें अध्याय में एक और उदाहरण देखते हैं, कि परमेश्वर नकली उपासना से प्रभावित नहीं होता। और हमने निर्वासन-पूर्व काल में यह देखा था।

आमोस इस बारे में बात करने जा रहा है। मुझे अपने बलिदान, अपने गीत और अपनी भेंट लाना बंद करो। न्याय को पानी की तरह बहने दो, तब मैं प्रसन्न हो जाऊँगा।

मीका कहते हैं, परमेश्वर हमसे क्या चाहता है? यह सिर्फ़ भव्य बलिदान नहीं है। यह प्रेमपूर्ण दया, न्याय करना और अपने परमेश्वर के सामने नम्रता से चलना है। यशायाह कहते हैं, मेरे पास आना और मेरे आँगन को रौंदना बंद करो।

जब भी तुम प्रार्थना में अपने हाथ उठाते हो, तो मैं तुम्हारे हाथों पर खून के धब्बे देखता हूँ, जो तुमने उन लोगों के साथ किया है जिनका तुमने फायदा उठाया है। तो, यहाँ भी यही मुद्दा है। इस तरह की हरकतें करना बंद करो और सच्चा न्याय करो।

फ्रैंक लॉबैक कहते हैं कि अगर आप ईश्वर को समर्पित किसी तरह की नींद भरी भक्ति से थक गए हैं, तो संभवतः ईश्वर भी आपसे उतना ही थक गया है। और इसलिए, भगवान वास्तव में नींद भरी भक्ति, उपवास जो वे कर रहे थे, इस अनुष्ठान से थक गए थे। आखिरकार ईश्वर जो देखना चाहते थे, वह सच्चा न्याय था।

अब, इस भाग में परमेश्वर फिर से लोगों को प्रोत्साहित करने जा रहा है और उनसे वादा करता है कि उसके पास उनके लिए एक महान भविष्य है। साइरस के आदेश के बाद और जरुब्बाबेल के नेतृत्व में भूमि पर वापस आने पर उन्होंने जो अनुभव किया है, वह बहुत अच्छा है कि परमेश्वर उन्हें भूमि पर वापस ले आया है, लेकिन कई मायनों में यह अभी भी एक कठिन समय है। यह एक निराशा रही है, और वे अभी भी विदेशी उत्पीड़न के तहत रह रहे हैं।

इसलिए, परमेश्वर ने यहूदा के भविष्य के लिए अद्भुत वादे किए हैं। यहाँ एक अंश जो दर्शाता है, अध्याय आठ, श्लोक चार, बूढ़े पुरुष और बूढ़ी महिलाएँ फिर से यरूशलेम की सड़कों पर बैठेंगी, जिनमें से प्रत्येक बड़ी उम्र के कारण अपने हाथों में लाठी लिए हुए होगा। और शहर की सड़कें सड़क पर खेलते हुए लड़कों और लड़कियों से भरी होंगी।

सेनाओं का यहोवा यों कहता है, यदि यह उन दिनों में इन बचे हुएों की दृष्टि में अद्भुत होगा, तो क्या यह मेरी दृष्टि में भी अद्भुत होगा, यहोवा की यही वाणी है। सेनाओं का यहोवा यों कहता है, देखो, मैं अपनी प्रजा को पूर्व देश से और पश्चिम देश से छुड़ाऊँगा। और मैं उन्हें यरूशलेम के बीच में बसाऊँगा, और वे मेरी प्रजा ठहरेंगे, और मैं सच्चाई और धर्म के साथ उनका परमेश्वर ठहरूँगा।

तो, यहाँ हमें यह विचार मिलता है कि लोगों के लिए एक और वापसी की प्रतीक्षा है और भविष्य में एक आशीर्वाद होगा जो वर्तमान में उनके द्वारा अनुभव किए जा रहे अनुभव से बढ़कर होगा। इसलिए, यदि आप अभी जो हो रहा है उससे निराश हैं, तो प्रतीक्षा करें कि भविष्य में परमेश्वर क्या करने जा रहा है। और इसलिए, यह विस्तार करता है और भविष्यद्वक्ताओं यशायाह, यिर्मयाह, यहजेकेल द्वारा दिए गए पुनर्स्थापना के वादों की और अधिक समझ प्रदान करता है।

पुनर्स्थापना के लिए एक चरण है, लेकिन भविष्य में एक चरण दो भी होने जा रहा है। यरूशलेम के लिए परमेश्वर ने जो कुछ रखा है, उसका एक और प्रतिबिंब, अध्याय आठ, श्लोक 20 से 23: लोग फिर आएंगे, यहां तक कि कई शहरों के निवासी, एक शहर के निवासी दूसरे शहर में जाएंगे और कहेंगे, आओ हम यहोवा से अनुग्रह मांगने और सेनाओं के यहोवा को खोजने के लिए तुरंत ऊपर जाएं और कहें, मैं स्वयं जा रहा हूँ। कई राष्ट्र और कई लोग और मजबूत राष्ट्र यरूशलेम में सेनाओं के यहोवा को खोजने और यहोवा का अनुग्रह पाने के लिए आएंगे।

प्रभु कहते हैं कि उन दिनों में, हर भाषा के राष्ट्रों में से 10 पुरुष एक यहूदी के वस्त्र को पकड़ेंगे और कहेंगे, चलो हम तुम्हारे साथ चलते हैं, क्योंकि हमने सुना है कि परमेश्वर तुम्हारे साथ है। और इसलिए, भविष्य में राष्ट्र प्रभु की आराधना करने के लिए आगे आएंगे। अब कोई बेबीलोन या सीरियाई सेना नहीं होगी जो यरूशलेम पर हमला करने आएगी।

राष्ट्र स्वयं प्रभु की आराधना करने जा रहे हैं, और राष्ट्रों के 10 लोग वास्तव में यरूशलेम जा रहे एक यहूदी तीर्थयात्री को पकड़ लेंगे और कहेंगे, चलो हम तुम्हारे साथ चलते हैं। यही भविष्य है जो परमेश्वर ने इस्राएल के लिए रखा है। निर्वासन से वापसी कहानी का अंत नहीं है, लेकिन जकर्याह जिस बात पर जोर देने जा रहा है वह यह है कि वे आशीर्वाद इस तथ्य पर आधारित हैं कि लोगों को पूरी तरह से, पूरी तरह से और वास्तव में प्रभु की ओर मुड़ना चाहिए।

इसलिए, अध्याय 8, श्लोक 16 में, इन सभी वादों के बीच, एक दूसरे से सच बोलो, अपने फाटकों में सच्चे फैसले सुनाओ, और शांति स्थापित करो। अपने दिलों में बुराई की योजना मत बनाओ। जब तुम न्याय की ओर लौटोगे, तो पूरा उद्धार होगा।

तो, यह सब, आंशिक पश्चाताप जो आंशिक आशीर्वाद की ओर ले जाता है, अंततः पूर्ण पश्चाताप का मार्ग प्रशस्त करेगा जो पूर्ण आशीर्वाद लाएगा, और परमेश्वर इसे लाने के लिए प्रतिबद्ध है। हालाँकि, लोगों को निर्वासन से वापसी के शुरुआती चरणों में इसका अनुभव नहीं होने वाला है। यह सब हमें जकर्याह 9-14 के संदेश की ओर ले जाता है, जहाँ अब ध्यान तत्काल भविष्य से परे है।

और जबकि अध्याय 1-8 ने हमें इस बारे में अंतर्दृष्टि दी है कि अभी तक क्या नहीं है, लेकिन यह मुख्य रूप से तत्काल विवरण और जरुब्बाबेल और यहोशू और उस समय लोगों द्वारा किए जा रहे पुनर्निर्माण पर केंद्रित है, जकर्याह 9-14 अधिक विस्तृत तरीके से भविष्य की बहाली को देखने जा रहा है। और इसलिए 1-8 में जोर वापसी पर है। 9-14 में जोर वापसी से परे वापसी पर है।

अब, लघु भविष्यवक्ताओं में उठने वाले परिचयात्मक मुद्दों और महत्वपूर्ण लेखकत्व प्रश्नों में से एक यह है कि आलोचनात्मक विद्वानों ने अक्सर जकर्याह 9-14 को अध्याय 1-8 में जो कुछ है, उससे बाद का माना है। इसके कई कारण हैं, और वे इस सामग्री को 8वीं शताब्दी से तारीख देंगे, जो जकर्याह के समय से बहुत पहले की है, या कुछ सामग्री जो 8वीं शताब्दी से लेकर दूसरी शताब्दी तक है। ऐसा करने का मुख्य कारण सर्वनाश की शैली है; वे इसे बाद की चीज़ के रूप में देखते हैं।

और इस तथ्य के प्रकाश में कि हमारे पास ये सर्वनाशकारी छवियां हैं जो अंतिम समय पर ध्यान केंद्रित करती हैं, यह बाद की तिथि के लिए तर्क देने का एक कारण है। जकर्याह 9-14 में पाए जाने वाले समाजशास्त्रीय तनाव कथित तौर पर यहूदियों और सामरियों के बीच बाद के संघर्ष को दर्शाते हैं। अध्याय 9, श्लोक 13 में ग्रीस का उल्लेख है, हालाँकि हमारे पास असीरियन राजाओं द्वारा यूनानियों और यावान के संदर्भ भी हैं।

तो, क्या हम इसे बाद की तारीख के रूप में उपयोग कर सकते हैं। इन मुद्दों के बावजूद, और ये कुछ प्राथमिक मुद्दे हैं जो डेयूटेरो -जकर्याह को उसी तरह से देखने के लिए हैं जिस तरह से आलोचनात्मक विद्वानों ने डेयूटेरो या ट्रिटो -यशायाह के लिए तर्क दिया है, ऐसे अन्य सबूत हैं जो यह संकेत देते हैं कि यह सामग्री जकर्याह के मंत्रालय के समय के अंत में 6वीं शताब्दी के अंत में बहुत अच्छी तरह से फिट बैठती है और इसे वहां दिनांकित किया जा सकता है। अन्य अंतरों में से एक यह है कि हमारे पास जकर्याह अध्याय 1-8 में सामग्री के लिए एक तिथि है।

हमारे पास रात्रि दर्शन की तिथि है। हमारे पास अध्याय 7-8 में उपवास के बारे में प्रश्न के संबंध में जकर्याह को दिए गए उत्तर की तिथि है। जकर्याह 9-14 में पाए जाने वाले दो प्राथमिक खंडों के लिए कोई तिथि नहीं है।

तो ये कुछ कारण हैं कि क्यों पहले जकर्याह और दूसरे जकर्याह के बारे में यह बहस चल रही है। हालाँकि, फिर से, मुझे लगता है कि हमारे लिए यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि यह एक विहित एकता है और इन चीजों को विहित में एक साथ जोड़ा गया है। जकर्याह की पुस्तक के इन दो खंडों का संदेश एक दूसरे के बहुत अच्छे से पूरक हैं।

पुस्तक की एकता के संबंध में मार्क बोडा ने जो बातें बताई हैं, उनमें से एक यह है कि आपके पास न केवल दोनों के बीच साझा की गई बहुत सी शब्दावली है, बल्कि अध्याय 1-6 में वर्तमान से एक अच्छा बदलाव भी है और अध्याय 7-8 में जकर्याह 9-14 में भविष्य पर ध्यान केंद्रित किया गया है। पश्चाताप हुआ है, आशीर्वाद मिला है, लेकिन जब तक लोग पूरी तरह से परमेश्वर के पास वापस नहीं आते, तब तक वे उन सभी आशीर्वादों का अनुभव नहीं कर पाएंगे जिनका वादा परमेश्वर ने उनके लिए किया है। कुछ अर्थों में, अध्याय 7-8 हमारे लिए निकट आशीर्वाद और तत्काल आशीर्वाद और वर्तमान में हो रही बहाली से भविष्य की बहाली में आगे बढ़ते हैं जो वापसी में और वापसी से परे होने वाली है।

हैनसेन, जिन्होंने सर्वनाश साहित्य में व्यापक अध्ययन किया है, तर्क देते हैं कि यहाँ पाए जाने वाले सर्वनाश संबंधी विशेषताओं के आधार पर, हम इस सामग्री को 6वीं शताब्दी के मध्य से लेकर

4वीं शताब्दी के अंत तक का मान सकते हैं। इसलिए भले ही कोई भविष्यवाणी करने वाली आवाज़ हो जो जकर्याह की भविष्यवाणियों को किसी तरह से जोड़ती या स्पष्ट करती या विस्तारित करती हो, लेकिन यहाँ ऐसा कुछ भी नहीं है जो इसे दूसरी शताब्दी के बाद का मानता हो। एंड्रयू हिल ने अध्याय 9-14 में 2 जकर्याह की भाषा को देखा और कहा कि यह भाषा 515-445 ईसा पूर्व के वर्षों में बहुत अच्छी तरह से फिट बैठती है।

जकर्याह 10-1 में सूखे का संदर्भ और मूर्तिपूजा के संकेत अध्याय 10, श्लोक 1-3 में हैं। मार्क बोडेन ने कहा कि यह हाग्वै की पुस्तक में जो कुछ हो रहा है, उससे बहुत मेल खाता है, जब लोग वास्तव में मंदिर के पुनर्निर्माण का काम शुरू करते हैं। परमेश्वर ने उन पर वाचा के अभिशाप लाए हैं, उन्होंने इसका अनुभव किया है।

जकर्याह अध्याय 11 में चरवाहों के बारे में जो मार्ग हम देखते हैं, उसमें नेतृत्व को लेकर जो संघर्ष है, वह यहूदा के राज्यपाल के रूप में जरुब्बाबेल के शासन के अंत के समय से मेल खा सकता है। यह जरूरी नहीं कि यह यहूदियों और सामरियों के बीच चल रहे संघर्षों को दर्शाता हो। और इसलिए, एंड्रयू हिल और मार्क बोडेन जैसे बहुत ही योग्य और निपुण विद्वान हैं जो इस खंड को देखते हैं और ऐसी सामग्री देखते हैं जो जकर्याह के समय के साथ बहुत करीब से मेल खाती है।

तो, चाहे इनमें से कुछ इस पुस्तक में बाद में जोड़े गए अंशों को दर्शाते हों, या फिर कोई भविष्यवक्ता आवाज़ है जो जकर्याह के पदचिन्हों पर चल रही है, यह सब इतना महत्वपूर्ण नहीं लगता। यहाँ प्रामाणिक साक्ष्य यह है कि हमारे पास एक एकीकृत संदेश है। डैनी हेस इस तथ्य की ओर इशारा करते हैं कि पुस्तक के दो हिस्सों के बीच कई आकर्षक शब्द और समानताएँ हैं जो उन्हें एक साथ जोड़ती हैं।

और अगर शब्दावली में अंतर है, तो अध्याय 1-8 और अध्याय 9-14 में जो अंतर दिखाई देते हैं, वे इस तथ्य के कारण हो सकते हैं कि हमारे यहाँ अलग-अलग शैलियाँ हैं। दो अलग-अलग लेखकों के बजाय शैली के अंतर उन अंतरों के लिए जिम्मेदार हो सकते हैं जिन्हें विद्वानों ने पुस्तक के पहले भाग और पुस्तक के दूसरे भाग के बीच इंगित किया है। मैं चाहता हूँ कि हम इस बात पर ध्यान केंद्रित करें कि हम इससे आगे बढ़ें।

आइए इसका प्रामाणिक संदेश देखें। और इस भविष्य के राज्य और पुनर्स्थापना के अभी तक न आए पहलुओं के लिए एक वादा है जिसे इस्राएल अंततः अनुभव करेगा। यिर्मयाह ने कहा था कि प्रभु 70 साल बाद लोगों को भूमि पर वापस लाएगा।

दानियेल ने उस पहले की भविष्यवाणी को स्पष्ट करते हुए कहा, नहीं, यह वास्तव में सात के 70 सप्ताह होंगे। इसलिए, निर्वासन के 70 वर्षों से परे एक विस्तारित और लंबी अवधि। और मुझे लगता है कि जकर्याह के युगांत संबंधी दर्शन में भी यही चल रहा है।

एक प्रारंभिक वापसी है जो किसी बड़ी चीज़ की ओर इशारा करती है। उस भविष्य की वापसी में, यहाँ वे चीज़ें हैं जिनका परमेश्वर वादा करता है। परमेश्वर एक भावी राजा का वादा करता है जो इस्राएल में शांति लाएगा और जो अंततः उनके शत्रुओं पर शासन करेगा।

जकर्याह 9-10. हे सिय्योन की बेटी, बहुत आनन्द मना। हे यरूशलेम की बेटी, ऊंचे स्वर से जयजयकार कर।

देख, तेरा राजा तेरे पास आ रहा है, वह धर्मी और उद्धार पाया हुआ, दीन और गधे पर सवार, गदहे के बच्चे पर, गदही के बच्चे पर सवार। तो, दाऊद वंश की पुनर्स्थापना का भविष्यसूचक वादा, जो कि अध्याय 10, आयत 6-12 में ज़कर्याह के अंतिम युगांतशास्त्रीय दर्शन का हिस्सा है।

फिर से, मुझे लगता है कि पुराने नियम में भविष्यवाणी के विकास और प्रगति के तरीके को समझने में यह बहुत महत्वपूर्ण है। इस्राएल के भविष्य में एक वापसी होने वाली है। और इसलिए, निर्वासन के बाद की अवधि में ही, जकर्याह और हाग्वै जैसे भविष्यवक्ताओं ने समझ लिया कि यह अंत नहीं है।

यह सब कुछ नहीं है जो परमेश्वर ने इस्राएल के लिए किया है। वे हमारी युगांतिक दृष्टि को व्यापक बनाते हैं, जिससे हमें यह समझने में मदद मिलती है कि प्रभु भविष्य और महान वापसी लाने जा रहे हैं। अपने लोगों के साथ परमेश्वर के व्यवहार के पूरे इतिहास में, यहाँ उद्धार का एक पैटर्न है जहाँ परमेश्वर उद्धार के अधिक से अधिक कार्य करता है, जहाँ वह अंततः इस्राएल के लोगों से किए गए वाचा के वादों को पूरा करेगा।

तो, वापसी से परे इस भविष्य की वापसी का वर्णन हमारे लिए जकर्याह 10, श्लोक 6 और उसके बाद में किया गया है। मैं यहूदा के घराने को मजबूत करूँगा। मैं यूसुफ के घराने को बचाऊँगा।

मैं उन्हें वापस ले आऊँगा क्योंकि मुझे उन पर दया आती है। और वे ऐसे होंगे मानो मैंने उन्हें अस्वीकार नहीं किया था। क्योंकि मैं उनका परमेश्वर यहीवा हूँ, और मैं उनकी सुनूँगा।

पद 8. मैं उनके लिए सीटी बजाऊँगा, और उन्हें इकट्ठा करूँगा, क्योंकि मैंने उन्हें छोड़ा है। और वे उतने ही होंगे जितने पहले थे, यद्यपि मैंने उन्हें राष्ट्रों में तितर-बितर कर दिया है। फिर भी, दूर देशों में, वे मुझे याद करेंगे।

श्लोक 10. और दिलचस्प बात यह है कि यहाँ जिन राष्ट्रों का उल्लेख किया गया है, उन पर ध्यान दीजिए। मैं उन्हें मिस्र देश से वापस लाऊँगा, और मैं उन्हें अश्शूर से इकट्ठा करूँगा।

और मैं उन्हें गिलाद और लेबनान की भूमि पर ले जाऊँगा, जब तक कि उनके लिए कोई जगह न बचे। जकर्याह उन्हें मिस्र और असीरिया से वापस लाने की बात करता है। और इसलिए, यहाँ संभावना है कि जकर्याह आठवीं शताब्दी और असीरियन संकट के समय से पहले की भविष्यवाणी का उपयोग करके निर्वासन से वापसी के बारे में बात कर रहा है जो अभी भी भविष्य में है।

और इसलिए, उद्धार के इतिहास में और परमेश्वर की भविष्यवाणियों के वादों के कार्यान्वयन में हम पाते हैं कि निर्वासन से वापसी केवल एक बार नहीं होती। निर्वासन से वापसी की एक श्रृंखला होती है। मुक्ति के कार्यों की एक श्रृंखला होती है।

यीशु के पहले आगमन पर, और एन.टी. राइट ने इस बात पर ज़ोर दिया है, लोग अभी भी खुद को निर्वासन में मानते हैं। यीशु उनके निर्वासन से मुक्ति लाने और अंततः उन्हें न केवल बेबीलोनियों या रोमियों से बल्कि शैतान और उनके पाप से मुक्ति दिलाने के लिए आते हैं। और अंतिम दूसरा पलायन, अंतिम मुक्ति, यीशु के दूसरे आगमन पर होने जा रही है।

ज़ेकर्याह वापसी के इस पैटर्न की प्रतीक्षा कर रहा है। इस्राएल के पश्चाताप और प्रभु के पास उनकी वापसी का भी वादा है। याद रखें, पुस्तक के पहले भाग में, वे पश्चाताप करते हैं, लेकिन यह एक अपूर्ण पश्चाताप है।

वे अपने पापी तरीकों से पूरी तरह से दूर नहीं हुए हैं। आखिरकार, परमेश्वर इस समस्या को ठीक करने जा रहा है। और इसलिए, 12 की पुस्तक की शुरुआत में, जब होशे ने समस्या को उठाया, तो मैं लोगों को परमेश्वर की ओर लौटने के लिए कह रहा हूँ, लेकिन उनके ऊपर वेश्यावृत्ति की आत्मा है जो उन्हें मेरे पास लौटने की अनुमति नहीं देती है।

परमेश्वर इसे कैसे हल करेगा? होशे 14:4 पुस्तक के अंत में, मैं उनके धर्मत्याग को ठीक कर दूंगा। परमेश्वर ने 12 की पुस्तक की शुरुआत में असीरियन काल में ऐसा करने का वादा किया है। और 12 की पुस्तक के अंत में, जैसा कि हम निर्वासन के बाद के काल में हैं, परमेश्वर द्वारा अपने लोगों को ठीक करने और उनके धर्मत्याग की समस्या को ठीक करने का वादा किया गया है।

और यह यिर्मयाह और यहजकेल में जो हम देखते हैं उसके पूरक हैं कि परमेश्वर ने हृदय पर व्यवस्था लिखी या परमेश्वर ने अपने लोगों को भी नया हृदय दिया। ज़ेकर्याह कहता है कि यहाँ प्रभु का वादा है, मैं दाऊद के घराने और यरूशलेम के निवासियों पर अनुग्रह और दया की भावना उंडेलूँगा ताकि जब वे मेरी ओर देखें, जिसे उन्होंने छेदा है, तो वे उसके लिए विलाप करें। परमेश्वर अंततः पश्चाताप लाएगा क्योंकि वह अपने लोगों पर अनुग्रह और पश्चाताप की भावना उंडेलने जा रहा है जो उन्हें प्रभु के पास वापस लाएगा।

मैं यहाँ योएल में परमेश्वर द्वारा अपने लोगों पर आत्मा उंडेलने के वादों के साथ एक संबंध देखूँगा। यह परमेश्वर की आत्मा ही है जो अंततः लोगों को पूरी तरह से वापस लौटने और अपने पापों का पश्चाताप करने में मदद करेगी। अध्याय 13, श्लोक एक और छह, प्रभु अपने लोगों के पापों को शुद्ध करने जा रहा है।

प्रभु देश को शुद्ध करने जा रहे हैं और परमेश्वर के न्याय के उद्देश्य, अंततः ये न्याय चाहे जितने भी गंभीर और भयानक क्यों न हों, न्याय का उद्देश्य उनके लोगों को नष्ट करना या भस्म करना नहीं था। इन न्यायों का उद्देश्य अंततः उनके पाप को दूर करना था। यशायाह अध्याय चार में यशायाह यही बात कहता है।

परमेश्वर के न्याय की जलती हुई आग उसके लोगों की गंदगी को दूर कर देगी। ज़ेकर्याह के पास भी यही विचार है। यह भविष्य में कहेगा कि दाऊद के घराने और यरूशलेम के निवासियों के लिए पाप और अशुद्धता से शुद्ध करने के लिए एक फव्वारा खुला रहेगा।

भगवान उन्हें माफ कर देंगे, उन्हें शुद्ध करेंगे और उन्हें पवित्र करेंगे। और यहाँ वह सीमा है जिस तक लोग भगवान की ओर लौटने वाले हैं। उस दिन, यहोवा की घोषणा है, मैं देश से मूर्तियों के नाम मिटा दूँगा ताकि उन्हें फिर कभी याद न किया जाए।

और मैं देश से भविष्यद्वक्ताओं और अशुद्ध आत्माओं को भी निकाल दूँगा। ये इस्राएल के लिए अतीत में बड़ी समस्याएँ रही हैं। मूर्तिपूजा, भविष्यद्वक्ता जिन्होंने उन्हें गुमराह किया।

मैं उन चीज़ों को देश से हटाने जा रहा हूँ। यह न्याय उन सभी चीज़ों को मिटा देगा। और यदि कोई फिर से भविष्यवाणी करे, तो उसके पिता और उसकी माँ जिसने उसे जन्म दिया है, उससे कहेंगे, तू जीवित नहीं रहेगा क्योंकि तू यहोवा के नाम पर झूठ बोलता है।

और जब वह भविष्यवाणी करेगा तो उसके पिता और माता, जिन्होंने उसे जन्म दिया था, उसे छेद देंगे। और इसलिए, वे प्रभु के प्रति इतने समर्पित होंगे कि एक पिता और माता भी, यदि उनका बेटा देश में मूर्तिपूजा शुरू करने की हिम्मत करता है, तो वे ही उस पर व्यवस्थाविवरण 13 की सज़ा को लागू करेंगे। लोग परमेश्वर के लिए उत्साही होने जा रहे हैं।

पद्य चार, उस दिन, हर नबी भविष्यवाणी करते समय अपने दर्शन से शर्मिंदा होगा। वह धोखा देने के लिए बालों वाला लबादा नहीं पहनेगा, बल्कि वह कहेगा, मैं कोई नबी नहीं हूँ। मैं एक ऐसे आदमी के लिए मिट्टी का काम करनेवाला हूँ, जिसने मुझे मेरी जवानी में बेच दिया।

और अगर कोई पूछे, तुम्हारी पीठ पर ये घाव क्या हैं? तो वह कहेगा, ये घाव मुझे मेरे दोस्तों के घर में मिले हैं। इसलिए झूठे भविष्यद्वक्ता भी, जिन्होंने लोगों को गुमराह किया है, अब लोगों को धोखा देने की हिम्मत नहीं करेंगे। भगवान मूर्तिपूजा को खत्म करने जा रहे हैं।

परमेश्वर झूठी भविष्यवाणी को दूर करने जा रहा है। इस्राएल पूरी तरह से प्रभु की आज्ञा मानने जा रहा है, और अतीत के पाप दोहराए नहीं जाएँगे। अंत में, जकर्याह 12 और जकर्याह 14 भी इस तथ्य के बारे में बात करते हैं कि परमेश्वर भविष्य में इस्राएल पर आक्रमण करने वाले शत्रुओं को पराजित करने जा रहा है।

प्रभु यरूशलेम शहर को बचाने जा रहे हैं। जकर्याह 12 और जकर्याह 14 में हमें इसकी थोड़ी अलग छवि मिलती है, लेकिन अंततः परमेश्वर उन्हें बचाने जा रहा है। इसलिए भविष्यवाणियों के भविष्य के बारे में जकर्याह की समझ, फिर से, निर्वासन और निर्वासन से पहले के भविष्यद्वक्ताओं की तुलना में अधिक विस्तृत और विकसित है क्योंकि अब जकर्याह समझता है कि परमेश्वर बेबीलोनियों को लाया है।

उन्होंने हमारा न्याय किया है। परमेश्वर ने हमें बचाया है। लेकिन भविष्यसूचक भविष्य के बारे में उनकी समझ यह है कि एक और आक्रमण होने वाला है, और एक और दुश्मन सेना आकर यरूशलेम पर हमला करेगी और शहर को घेर लेगी और परमेश्वर के लोगों को धमकाएगी।

और परमेश्वर इसे अपने लोगों पर एक शुद्धिकरण न्याय के रूप में उपयोग करेगा। लेकिन जब वह उनका न्याय करेगा और दुश्मन के आक्रमण और हमले और हार के इस चक्र के बाद, जो

कुछ भी दोहराया गया है, उसके बाद, परमेश्वर अंततः अपने लोगों को छुड़ाने जा रहा है। और फिर पृथ्वी के राष्ट्र जिन्होंने यरूशलेम पर हमला किया है, वे बचे हुए लोग बन जाएंगे और जो बचे हुए लोग बचेंगे वे प्रभु की आज्ञा मानेंगे और उनकी आराधना करेंगे।

इसलिए, आक्रमण, पराजय और निर्वासन का पैटर्न आगे बढ़ता है। इस अंश और जकर्याह की पुस्तक के इस भाग का पूरा ध्यान वापसी से परे वापसी पर है, जो कि भविष्य में परमेश्वर अपने लोगों के लिए पुनर्स्थापना और उद्धार का महान कार्य करेगा। जहाँ मैं पुस्तक के इस भाग के संदेश को विकसित करने के लिए यहाँ थोड़ा समय बिताना चाहूँगा। मुझे लगता है कि ईसाइयों के रूप में हमारे लिए यह महत्वपूर्ण है कि हम इस पुस्तक से निकलने वाले मसीहाई संदेश को समझें।

इस अंश में कुछ मुख्य मसीहाई ग्रंथ हैं, दोनों इस अर्थ में कि हमारे पास मसीहा के बारे में प्रत्यक्ष भविष्यवाणियाँ हैं, लेकिन फिर इस खंड में भविष्य के उद्धार और संपूर्ण रूप से पुनर्स्थापना पर जोर देने के प्रकाश में भी। ऐसे अंश भी हैं जिन्हें नया नियम मसीहाई तरीके से पढ़ता है जो मुझे लगता है कि इन अंशों में वास्तव में जो देखा और समझा गया है उससे भी परे है। हालाँकि, यह एक तरह का महत्वपूर्ण अंश है, और मुझे लगता है कि यहाँ जो हमारे पास है वह निश्चित रूप से भविष्य के आदर्श दाऊदी शासक, मसीहा की प्रत्यक्ष भविष्यवाणी है; मसीह का आगमन जकर्याह 9 पद 9 में पाया जाता है। इस भविष्यवाणी में, हमने इस तथ्य के बारे में बात की है कि अक्सर, घटनाओं की भविष्यवाणी समयरेखा अस्पष्ट होती है। जाहिर है, जकर्याह को नहीं पता कि यह भावी शासक कब आने वाला है।

मसीहा के आगमन के बारे में अन्य विवरण भी हैं जो समयरेखा के संदर्भ में यहाँ पूरी तरह से विकसित नहीं किए गए हैं। जकर्याह यीशु के पहले आगमन और यीशु के दूसरे आगमन के बीच के अंतर को नहीं समझता है। वह उस व्यक्ति की तरह है जो बाहर देखता है, और उसे दूरी पर दो पहाड़ दिखाई देते हैं।

वह उन आशीषों और चीज़ों को देखता है जिनका वादा परमेश्वर ने मसीह के प्रथम आगमन, राज्य के उद्घाटन के साथ अपने लोगों के लिए किया है। वह उन आशीषों को देखता है जो अंततः दूसरे आगमन, पूर्णता पर होंगी, लेकिन वह यीशु के प्रथम आगमन और दूसरे आगमन के बीच अंतर नहीं जानता या अंतर नहीं देखता। और इसलिए, जकर्याह 9 पद 9 में, हम देखते हैं कि राजा इस्राएल के लोगों के पास आ रहा है।

तुम्हारा राजा तुम्हारे पास धर्मी बनकर आ रहा है और उसके पास एक गधा है, वह विनम्र है और गधे पर सवार है, एक बछेड़े पर, गधे के बच्चे पर। और इसलिए, नए नियम में, इसे यीशु के पहले आगमन में पूरा होने के रूप में समझा जाता है। पाम संडे, मैथ्यू अध्याय 21 पर यीशु खुद को इज़राइल के राजा के रूप में प्रस्तुत करते हैं।

और कम से कम इस बात की अस्थायी स्वीकृति तो है, लेकिन अंततः, वह पूरी तरह से शासन नहीं करता। वह पूरी तरह से राजा नहीं बनता। उसे अस्वीकार कर दिया जाता है और सूली पर चढ़ा दिया जाता है।

और इसलिए, इसके परिणामस्वरूप, आयत 10 से 13 में इस्राएल के शत्रुओं की पराजय के बारे में जो वादे दिए गए हैं, जिन्हें यह राजा पूरा करेगा और शासन और शांति का शासन और यरूशलेम और इस्राएल और लोगों को उनके शत्रुओं से मुक्ति दिलाएगा, वे बातें दूसरे आगमन तक पूरी नहीं होती हैं। लेकिन जकर्याह उन सभी को एक निरंतर घटना के रूप में देखता है। गधे पर सवार राजा की प्रस्तुति है, और फिर जकर्याह 9 से 13 में राजा का विजयी शासन है क्योंकि वह अपने शत्रुओं पर शासन करता है और शासन करता है।

इसलिए, भविष्य के मसीहा का दर्शन जकर्याह के वादों में एक महत्वपूर्ण तत्व है। यह उस पुनर्स्थापना के लिए महत्वपूर्ण है जो इसके परिणामस्वरूप होने जा रही है। और इसलिए इसके प्रकाश में, नया नियम इस पूरे खंड को मसीहाई निहितार्थों के रूप में पढ़ने जा रहा है।

हम जकर्याह अध्याय 11 में जाते हैं, और यहाँ उन निकम्मे नेताओं और निकम्मे चरवाहों पर ध्यान केंद्रित किया गया है जिनसे परमेश्वर के लोगों को अपने पूरे इतिहास में निपटना पड़ा है। इन बुरे चरवाहों का उल्लेख हमें सबसे पहले अध्याय 10, श्लोक 2 और 3 में मिलता है। घर के देवता जो बकवास हैं, भविष्यवाक्ता झूठ देखते हैं, वे झूठे सपने बताते हैं, और वे खोखली सांत्वना देते हैं। इसलिए, लोग भेड़ों की तरह भटकते हैं, और वे चरवाहे की कमी से पीड़ित हैं।

इसलिए, पूरे इस्राएल के इतिहास में बुरे नेतृत्व की समस्या रही है। यहजेकेल अध्याय 34 यहूदा के बेकार चरवाहों पर परमेश्वर के न्याय के बारे में बात करता है, जिन्होंने लोगों की देखभाल करने के बजाय लोगों को खिलाया और उनके साथ दुर्व्यवहार किया और उनके साथ सभी प्रकार के भयानक काम किए। यहजेकेल का वादा है कि परमेश्वर अंततः इस बुरे नेतृत्व को उलट देगा।

परमेश्वर अंततः निकम्मे चरवाहों की जगह भविष्य के दाऊद को लाने जा रहा है जो लोगों की देखभाल करेगा, उनका नेतृत्व करेगा, उनका मार्गदर्शन करेगा, और वह उस तरह का नेता होगा जैसा परमेश्वर हमेशा से चाहता था कि दाऊद के राजा बनें। लेकिन जकर्याह के दिनों में, हमारे पास अभी भी बुरे चरवाहों और बुरे नेताओं का मुद्दा है। इसलिए, इस संदेश को नाटकीय रूप देने के लिए, जकर्याह एक भविष्यवाणी नाटक या एक भविष्यवाणी संकेत कार्य करने जा रहा है, जो अध्याय 11 में इन झूठे चरवाहों के खिलाफ एक संदेश देता है।

यह इस्राएल के लोगों के खिलाफ भी एक संदेश है क्योंकि उन्होंने अपने ऊपर परमेश्वर के नेतृत्व को अस्वीकार कर दिया है, और उन्होंने इन बेकार चरवाहों का अनुसरण किया है जिन्होंने उन्हें गुमराह किया है और अंततः उनके लिए न्याय लाया है। तो, जकर्याह अध्याय 11 में बेकार चरवाहों और लोगों द्वारा परमेश्वर को अस्वीकार करने का यह नाटक है। मुझे लगता है कि जकर्याह अध्याय 11 को हम दो तरीकों से पढ़ सकते हैं।

जकर्याह 11 एक ऐसा नाटक हो सकता है जो हमें इस्राएल के पूरे इतिहास और उस पूरे इतिहास की याद दिलाता है जहाँ उन्होंने इन बुरे नेताओं को सहन किया है। यह एक विशिष्ट नाटक भी हो सकता है जो निर्वासन के बाद के समुदाय में मौजूद नेतृत्व के प्रकारों को संदर्भित करता है। शायद यह नाटक राज्यपाल के रूप में जरुब्बाबेल के नेतृत्व के अंत के समय के आसपास, लगभग 510 ईसा पूर्व में खेला गया हो।

ऐसे और भी बेकार नेता हैं जो जरुब्बाबेल के पदचिन्हों पर नहीं चल रहे हैं और जो लोगों को उस मार्ग पर नहीं ले जा रहे हैं जिस पर उन्हें चलना चाहिए। तो यहाँ जो होता है वह यह है कि जकर्याह एक चरवाहे की भूमिका निभाता है और एक लाठी लेकर घूमता है। वह एक चरवाहे जैसा दिखता है।

वह एक चरवाहे की तरह काम करता है। विचार यह है कि वह उन बेकार नेताओं की जगह लेता है जो यहूदा के पास या तो उनके पिछले इतिहास में थे या उनके वर्तमान इतिहास में अनुभव किए गए थे। उनके कर्मचारियों में से एक का नाम फेवर है, जो उस आशीर्वाद के बारे में बात करता है जो परमेश्वर अपने लोगों पर बरसाने जा रहा है।

यूनियन नामक अन्य कर्मचारी इस तथ्य के बारे में बात करता है कि परमेश्वर अंततः अपने लोगों को वापस लाने जा रहा है। इसलिए, जैसा कि जकर्याह यह अभिनय कर रहा है, यहाँ आशा का संदेश है। हमारे पास अतीत में यह सब बुरा नेतृत्व रहा है, और शायद हम वर्तमान में इस बुरे नेतृत्व से जूझ रहे हैं, लेकिन परमेश्वर लोगों पर अपना अनुग्रह दिखाने जा रहा है।

परमेश्वर एक अच्छा नेता प्रदान करने जा रहा है। परमेश्वर स्वयं अपने लोगों का नेता बनने जा रहा है। परमेश्वर उनका चरवाहा बनने जा रहा है।

मुझे लगता है कि जब जकर्याह यह सब कर रहा है, तो नबी ईश्वर की भूमिका निभा रहा है और लोगों को अवसर दे रहा है। देखिए, आपको इस बुरे नेतृत्व की ज़रूरत नहीं है। आप प्रभु का नेतृत्व पा सकते हैं।

प्रभु अपने लोगों की देखभाल करना चाहता है और उन्हें सही तरह के नेता देना चाहता है। हालाँकि, आखिरकार, और यह समझना हमारे लिए कठिन है, लोग जकर्याह को अस्वीकार करते हैं। वे नहीं चाहते कि वह यह भूमिका निभाए, और वे बुरे नेताओं को पसंद करते हैं जिनके साथ उन्हें रहना और निपटना पड़ा है।

इसके परिणामस्वरूप, इस नाटक के अभिनय में, इस सांकेतिक अभिनय का उद्देश्य लोगों को यह दिखाना है कि उन्होंने परमेश्वर के नेतृत्व को अस्वीकार कर दिया है और उन्होंने परमेश्वर के आशीर्वाद के प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया है। वह कर्मचारियों का पक्ष और एकता लेता है और उन्हें तोड़ता है और लोगों के साथ किए गए वाचा को रद्द करता है। देखो, मैं चरवाहे की इस भूमिका का अभिनय कर रहा हूँ।

मैं अब ऐसा नहीं करने जा रहा हूँ। तुमने मुझे अस्वीकार कर दिया है, और मैं अब तुम्हारा चरवाहा नहीं बनने जा रहा हूँ। अब हमने देखा है और हम भविष्यवाणियों के साहित्य में कई स्थानों पर देखते हैं जहाँ भविष्यवाक्ता अपने संदेश को सांकेतिक कृत्यों और नाटकों के साथ प्रस्तुत करते हैं।

यिर्मयाह अपनी गर्दन पर जूआ पहनकर लोगों के बेबीलोन में गुलामी के बारे में बात करता है। यिर्मयाह लोगों के सामने एक बर्तन तोड़ता है, जो इस बात का प्रतीक है कि परमेश्वर न्याय करके उन्हें चकनाचूर करने वाला है। यिर्मयाह कुम्हार के पास जाता है।

कुम्हार मिट्टी को आकार देता है। परमेश्वर अभी भी अपने लोगों को आकार देना और सुधारना चाहता है। इसलिए लोगों ने समझा कि एक भविष्यवक्ता नाटकीय ढंग से उस संदेश को प्रस्तुत कर रहा है जिसका वह प्रचार करने की कोशिश कर रहा था।

यहेजकेल ऐसा ही करता है, निर्वासन और यहाँ होने वाले न्याय के विभिन्न पहलुओं को दर्शाता है। मुझे लगता है कि अध्याय 11 में यही चल रहा है। अंततः लोगों के सामने, कुछ समय तक ऐसा करने के बाद, वह उस छड़ी को तोड़ देता है जो इन दो वादों, अनुग्रह और एकता का प्रतिनिधित्व करती है।

वह कहता है, उस दिन, मैंने वाचा को रद्द कर दिया, और भेड़ व्यापारी जो मुझे देख रहे थे, उन्हें पता था कि यह प्रभु का वचन था। वे जानते थे कि यह परमेश्वर का संदेश था। इस नाटक का अंतिम कार्य और अंततः लोगों द्वारा परमेश्वर के नेतृत्व को अस्वीकार करने के कारण उनकी अस्वीकृति को दर्शाता है, वह है श्लोक 12 में, जकर्याह कहता है कि यदि यह तुम्हें अच्छा लगे, तो मुझे मेरी मजदूरी दे दो।

मैं सेवा कर रहा हूँ और इस अभिनय में, मुझे मेरी मजदूरी दो। नाटक का अंतिम दृश्य यह है कि जकर्याह को इस समय के लिए मजदूरी के रूप में दिया जाता है जब उसने इस्राएल के नेता के रूप में सेवा की थी। उसे 30 चांदी के टुकड़े दिए जाते हैं।

इसका मतलब यह है कि ये एक गुलाम की मजदूरी या कीमत है। यहाँ जकर्याह है। वह परमेश्वर का अभिषिक्त प्रवक्ता है।

इस नाटक के अभिनय में वे एक पैगम्बर हैं। उन्होंने भगवान का प्रतिनिधित्व किया है, और भगवान लोगों का चरवाहा बनना चाहते हैं। नाटक का अंतिम दृश्य और यहाँ पंचलाइन है।

लोग उस नेतृत्व के बारे में क्या सोचते हैं? वे इसे खारिज करते हैं, और कहते हैं, हमारे नेता के रूप में, आप हमारे लिए एक गुलाम से ज़्यादा कुछ नहीं हैं। इसलिए, जकर्याह इसे लेता है। वह मंदिर में चांदी के 30 टुकड़े फेंकता है, शायद यह उस पूजा के भ्रष्टाचार को दर्शाता है जो इस शुरुआती चरण में भी है।

श्लोक 14 में कहा गया है, मैंने यहूदा और इस्राएल के बीच भाईचारे को खत्म करने वाली दूसरी छड़ी को तोड़ दिया। इसलिए अब, परमेश्वर के सकारात्मक नेतृत्व के बजाय, वे इन भ्रष्ट, बुरे चरवाहों के गलत निर्देशन के तहत पीड़ित होते रहेंगे। यह अंतिम पुनर्स्थापना तक इस्राएल के इतिहास का हिस्सा बनने जा रहा है।

अब अगर आप इस कहानी पर नज़र रख रहे हैं और नए नियम को जानते हैं, तो आप मसीह से इसका स्पष्ट संबंध देख सकते हैं। नया नियम यीशु के विश्वासघात के बारे में बात करने जा रहा है। जैसा कि यहूदा को यीशु के साथ विश्वासघात करने के लिए चांदी के सिक्के दिए जाते हैं, वे इसे जकर्याह 11 में दिखाए गए नाटक की पूर्ति के रूप में देखते हैं।

जब यहूदा यीशु को अस्वीकार करता है और उसके साथ विश्वासघात करता है और इसके लिए उसे चाँदी का भुगतान किया जाता है, तो वह उस अस्वीकृति का प्रतीक बन जाता है जो पूरे इस्राएल ने अपने मसीहा के प्रति अधिकांशतः प्रदर्शित की है। तो यहाँ जो हो रहा है वह यह है कि जकर्याह 11 विशेष रूप से यीशु के बारे में एक प्रत्यक्ष भविष्यवाणी नहीं है। यह उस समय के लोगों के आध्यात्मिक विद्रोह और इस तथ्य से निपटने के लिए एक भविष्यवाणी और एक संकेत कार्य है कि वे नहीं चाहते कि प्रभु उनका चरवाहा बने।

किसी अज्ञात कारण से, वे अभी भी इन भ्रष्ट चरवाहों के नेतृत्व को पसंद करते हैं। इसलिए, जकर्याह 11 में जो कुछ है वह यीशु के बारे में प्रत्यक्ष भविष्यवाणी नहीं है, लेकिन हमारे पास इस बड़े पुनर्स्थापना मसीहाई संदर्भ में एक प्रकार और एक पैटर्न है जो स्पष्ट रूप से हमें यीशु से जोड़ता है। जिस तरह से जकर्याह के दिनों में लोगों ने प्रभु को अपने चरवाहे के रूप में अस्वीकार कर दिया था, जब यहूदा और नेताओं ने यीशु को धोखा देने और उसे मौत के घाट उतारने की साजिश रची थी, वे एक बार फिर यीशु के व्यक्तित्व में परमेश्वर को अस्वीकार कर रहे हैं।

यीशु को इस्राएल के लोगों के पास उनका अच्छा चरवाहा बनने के लिए भेजा गया था, ताकि अंततः उन्हें बचाया जा सके और उनका उद्धार किया जा सके, लेकिन लोगों ने उस नेतृत्व को अस्वीकार कर दिया। उस विश्वासघात के लिए जो कीमत चुकाई जाती है वह एक दास की मजदूरी है। यहूदा का मानना है कि वह जो प्राप्त कर सकता है जो एक दास को दिया जा सकता है या भुगतान किया जा सकता है वह उसके रिश्ते या इस्राएल के चरवाहे और मसीहा के रूप में यीशु के नेतृत्व से अधिक मूल्यवान है।

तो, यहाँ एक प्रकार की व्यवस्था चल रही है। जकर्याह अध्याय 11 में प्रभु को अस्वीकार करना, सुसमाचारों और मत्ती अध्याय 27 में इस्राएल द्वारा यीशु को उनके मसीहा के रूप में अस्वीकार करने की भविष्यवाणी करता है। जिस तरह से निर्वासन के बाद की अवधि में पूर्ण बहाली नहीं हो सकती क्योंकि लोगों ने परमेश्वर को अस्वीकार कर दिया है, उसी तरह यीशु के पहले आगमन पर पूर्ण बहाली नहीं हो सकती क्योंकि वे उसे स्वीकार नहीं करते या उसे अपने चरवाहे के रूप में नहीं पहचानते।

हमारे पास एक और मार्ग है जो मुझे लगता है कि इस्राएल द्वारा प्रभु को अस्वीकार करने और उनके लिए जो कुछ वह करता है और निर्वासन के बाद की अवधि में उनके लिए जो कुछ वह करना चाहता है और जकर्याह अध्याय 12 पद 10 में इस्राएल के लोगों द्वारा यीशु के पहले आगमन के समय अनुभव की गई अस्वीकृति के बीच एक प्रकार का विकास करता है। भविष्य की पुनर्स्थापना की प्रतीक्षा करते हुए, मैं दाऊद के घराने और यरूशलेम के निवासियों पर अनुग्रह और शांति की आत्मा और दया की याचना उंडेलूंगा ताकि जब वे मेरी ओर देखें, जिसे उन्होंने बेधा है, तो वे उसके लिए विलाप करें जैसे कोई अपने इकलौते बच्चे के लिए विलाप करता है। यहाँ छेदने का विचार, जिस शब्द का यहाँ उपयोग किया गया है, अक्सर उस घाव के लिए उपयोग किया जाता है जो एक सैनिक को तब दिया जाता है जब उसे युद्ध में तलवार से वार किया जाता है।

इसका इस्तेमाल गंभीर घाव का वर्णन करने के लिए किया जा सकता है। इसका इस्तेमाल घातक घाव का वर्णन करने के लिए किया जा सकता है। यहाँ, अध्याय 11 में इस्राएल की अस्वीकृति को विश्वासघात या दास मजदूरी के दर्द के रूप में चित्रित किया गया है।

वे यहाँ प्रभु को अपने नेता के रूप में अस्वीकार कर चुके होंगे। यह अस्वीकृति एक घाव की तरह है, एक योद्धा का घाव जो वे यहोवा को इसलिए देते हैं क्योंकि उन्होंने उसे अस्वीकार कर दिया है। जकर्याह अध्याय 12 पद 10 जो वादा कर रहा है वह यह है कि अंततः, परमेश्वर लोगों पर पश्चाताप की भावना उंडेलेगा ताकि उन्हें एहसास हो कि उन्होंने प्रभु को अस्वीकार कर दिया है और उनका उसे अस्वीकार करना एक सैनिक के तलवार के घाव जितना ही गंभीर है।

लेकिन फिर से, हमारे पास एक ऐसा अंश है जो पुराने नियम में लिया गया है जो जकर्याह के दिनों में लोगों द्वारा यहोवा को अस्वीकार करने का संदर्भ देता है। यह नए नियम में यीशु को क्रूस पर चढ़ाने और अस्वीकार करने से जुड़ा है। यूहन्ना अध्याय 19 में कहा गया है कि जब सैनिकों ने भाला लिया और यीशु को छेद दिया, तो यह जकर्याह अध्याय 12 की पूर्ति थी।

खैर, फिर से, हमारे पास यहाँ कोई सटीक और स्पष्ट भविष्यवाणी नहीं है कि यह विशिष्ट बात यीशु के साथ घटित होने वाली है, लेकिन हमारे पास एक प्रकार की भविष्यवाणी है। जिस तरह से जकर्याह के दिनों में लोगों ने अपनी अस्वीकृति से प्रभु को घायल किया, उसी तरह, अंततः, यीशु को तलवार से और भाले से छेदा जाएगा क्योंकि परमेश्वर के लोगों ने उन्हें अस्वीकार कर दिया था, और उद्धार तब तक नहीं होगा, और तब तक नहीं होगा जब तक उन्हें एहसास नहीं होगा कि उन्होंने क्या किया है। अब, इस सब में मसीहाई संबंध, जकर्याह 12 के संदर्भ में कुछ ऐसा है जो मुझे लगता है कि हमें इस ओर ले जाता है क्योंकि यह अध्याय 12 श्लोक 11 में कहता है, जब वे अपने पाप पर विलाप करते हैं और अपने किए पर पश्चाताप करते हैं, उस दिन, यरूशलेम में शोक उतना ही महान होगा जितना कि मगिदो के मैदान में हदद और रीमोन के लिए शोक था।

देश में हर परिवार अलग-अलग शोक मनाएगा, दाऊद के घराने का परिवार अलग-अलग, उनकी पत्नियाँ अलग-अलग, और सभी लोग, जिनमें शोक मनाने वाले नेता भी शामिल हैं। लेकिन जब यह मगिदो में होने वाले शोक का संदर्भ देता है, तो यहां संभावित ऐतिहासिक संदर्भ यह है कि वे राष्ट्रीय आपदा के समय को देख रहे हैं जब इस्राएल के सबसे धर्मपरायण राजा योशियाह की मृत्यु हुई थी। यह धर्मपरायण राजा मर गया।

यह राष्ट्रीय आपदा का समय था। वह एक युवा, जीवंत नेता थे, अभी भी 39 वर्ष के थे। इसलिए, इज़राइल के लिए शोक का यह समय कुछ वैसा ही था जैसा कि संयुक्त राज्य अमेरिका में राष्ट्रपति रूजवेल्ट या राष्ट्रपति कैनेडी के हमारे देश में होने पर शोक मनाया गया था।

और इसलिए, अंततः, राष्ट्रीय आपदा के उस समय और लोगों के दुख और शोक को देखते हुए, यह उस दुख और पश्चाताप और शोक की तरह होगा जो उन्हें तब होगा जब वे अंततः पहचान लेंगे कि उन्होंने प्रभु को अपने चरवाहे के रूप में अस्वीकार कर दिया है। और जब वे यह पहचान लेंगे कि उन्होंने अपने मसीहा को छेदा है और उसे भी अस्वीकार कर दिया है। एक अंतिम मसीहाई पाठ है, जकर्याह अध्याय 13, श्लोक सात से नौ।

और यहाँ लिखा है, "हे तलवार, मेरे चरवाहे के विरुद्ध उठ, और मेरे पास खड़े उस मनुष्य के विरुद्ध उठ, सेनाओं के यहोवा की यही वाणी है। चरवाहे को मार, तब भेड़ें तितर-बितर हो जाएँगी। मैं सारे देश के बाल-बच्चों के विरुद्ध अपना हाथ बढ़ाऊँगा, यहोवा की यही वाणी है।"

दो तिहाई लोग कटकर नष्ट हो जाएंगे और एक तिहाई लोग जीवित बच जाएंगे। और मैं फिर से सोचता हूँ, चरवाहे को तलवार से मारा जाएगा और फिर भेड़ें तितर-बितर हो जाएँगी। हमारे पास यहां यीशु की कोई प्रत्यक्ष भविष्यवाणी नहीं है, लेकिन हमारे पास एक प्रकार की संरचना है जिसे नए नियम में बड़े मसीहाई संदर्भ के कारण यीशु पर लागू किया गया है।

जकर्याह की पुस्तक के अध्याय 13, श्लोक सात में, यहाँ पर जो चरवाहे मारे जा रहे हैं, वे बेकार चरवाहे हैं जिन्होंने इस्राएल का नेतृत्व किया है और वे उस देश के पापी हैं जिन्हें परमेश्वर अध्याय 13, एक से नौ में अपने न्याय द्वारा शुद्ध करने जा रहा है। याद रखें कि इससे पहले आने वाली आयतों में, प्रभु देश में मौजूद मूर्तियों को मिटाने जा रहा है। प्रभु देश में मौजूद झूठे भविष्यद्वक्ताओं को मिटाने जा रहा है।

प्रभु उन चरवाहों को भी मिटाने जा रहे हैं जिन्होंने लोगों को गुमराह किया है, बुरे चरवाहे। तो, आखिरकार, बुरे चरवाहों के बारे में बात करने वाला यह अंश यीशु पर कैसे लागू हो सकता है? और मुझे लगता है कि यहाँ हमारे पास एक टाइपोलॉजी, एक सादृश्य है। और इसी तरह जब जकर्याह में चरवाहे को मारा जाता है और लोग तितर-बितर हो जाते हैं, जब चरवाहे के रूप में यीशु, अच्छे चरवाहे, पर जब उसे मारा जाता है, तो शिष्य तितर-बितर हो जाते हैं और वे डर जाते हैं।

लेकिन इस प्रकार की व्याख्या के बारे में सबसे बढ़िया बात यह है कि चरवाहे पर प्रहार और भेड़ों के तितर-बितर होने का न्याय अंततः इस बात की ओर इशारा करता है कि यीशु के व्यक्तित्व में चरवाहे पर प्रहार किस तरह अंततः लोगों की पुनर्स्थापना की ओर ले जाएगा और उसे लाएगा। इसलिए नया नियम जकर्याह अध्याय नौ से 13 को पुनर्स्थापना, परमेश्वर के युगांतिक राज्य से संबंधित एक अंश के रूप में पहचानता है। और वे इस पूरे खंड को मसीहाई तरीके से पढ़ते हैं।

परमेश्वर ने अपने लोगों को पुनर्स्थापना से भी आगे की पुनर्स्थापना का वादा किया है। और इसका एक मुख्य हिस्सा यह है कि यीशु, मसीहा के रूप में, अपने लोगों पर शासन करेगा। और फिर से, जैसा कि हमने जकर्याह पर अपने पहले पाठ के अंत में बात की थी, जकर्याह के दिनों के लोग अभी और अभी नहीं में जीते हैं।

लेकिन परमेश्वर की वफ़ादारी के कारण, वे भरोसा कर सकते थे, वे उन अंतिम वादों पर निर्भर हो सकते थे जो परमेश्वर ने अपने लोगों से किए थे। और हम, परमेश्वर के लोगों के रूप में, अभी और अभी के बीच में रहते हैं जो यीशु ने हमारे लिए पहले आगमन में किया है और जो परमेश्वर ने हमारे लिए दूसरे आगमन में वादा किया है।

और हम भी उन लोगों की तरह ही आश्चस्त हो सकते हैं कि जैसे परमेश्वर ने यीशु में अपने वादों को पूरा किया है, जैसे हम पहले से ही राज्य के उद्घाटन और आरंभ का अनुभव करना शुरू कर चुके हैं, हम जानते हैं कि इसका अंतिम आगमन होगा। और वह राज्य और वे राज्य वादे

यीशु के व्यक्तित्व, इस्राएल के मसीहा, और उनके लिए उनके द्वारा अंततः पूरा किए जाने वाले कार्य और चीज़ों पर केंद्रित हैं।

यह डॉ. गैरी येट्स और 12 की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 28, जकर्याह भाग 2 है।